# मुनि महनन्दि

**जीवन-परिचय :** मुनि महनन्दि भट्टारक वीरचन्द्र के शिष्य थे। ये अपने युग के अत्यन्त प्रतिष्ठित साहित्यकार थे। महनन्दि ने अपना कोई परिचय नहीं दिया है। बस, इन्होंने भट्टारक वीरचन्द्र को अपना गुरु माना है। ये मुनि कहलाते थे।

महनन्दि का समय 16वीं शताब्दी है।

**रचना-परिचय :** महनन्दि की एक ही रचना प्राप्त है—

**1. पाहुडदोहा :** यह रचना बारहखड़ी के क्रम से लिखी गयी है। इसमें 333 दोहे हैं। यह रचना उपदेशात्मक, आध्यात्मिक और नीति सम्बन्धी है। कवि ने छोटे-छोटे दोहों में सुन्दर भावों का गुम्फन किया है। स्थापत्य की दृष्टि से भी इस रचना का बहुत महत्त्व है।